

1260. = 2, 42 lith. Ausg. II. a. Zu सङ्गात् ergänzen die Scholien प्रमददिः.
1264. a. Ueber die wahre Bedeutung von द्रव्यप्रकृति s. das Wörterbuch u. प्रकृति 4.
1266. Vgl. Spruch 2409.
1270. Auch MBh. 2, 1958. a. द्वावेतौ. c. राजानं चाविरोद्धारं.
1276. Lies *Waaren* st. *Geräthschaften*.
1286. = KÂVJÂD. 2, 137. c. मे ist von uns richtig eingeschaltet worden.
1288. = Hit. ed. RODR. S. 112. b. रत्नति st. पात्त्यते.
1297. = Hit. ed. RODR. S. 40. c. तन्निमित्ते.
1301. Auch DAMPATI. 10. b. रिपुं. c. हि st. च.
1302. = Hit. I, 131 JOHNS. a. b. अर्थो बलवान्सर्वः अर्थोद्भवति. c. पश्येनं.
1328. = ed. RODR. S. 307. c. निःक्षिप्तस्त्वो हि मुखे.
1330. = Hit. IV, 28 JOHNS. b. युज्यते st. युध्यते. Vgl. Spruch 3133.
1337. = NĪTISAṆK. 79. d. वाध्यते st. वध्यते.
1339. = NĪTISAṆK. 84. d. एते यस्य st. यस्यैते हि.
1340. d. प्रतिपत्तिदत्त bedeutet *wissend, was zu thun ist*.
1344. = MBh. 12, 5021. b. कस्यचित्सुहृत् (!). c. अर्थतस्तु निबध्यते.
1348. = MBh. 2, 2682. a. न कालो दण्डमुद्यम्य.
1359. Vgl. Spruch 3038.
1362. = Hit. ed. RODR. S. 28. a. b. प्रृङ्गिणां च नदीनां च नखिनां शस्त्रपाणिनाम्.
1363. = 1, 70 lith. Ausg. II. c. भङ्गमशनं st. भध्यमसनं.
1376. = KÂVJÂD. 2, 135.
1377. = MBh. 1, 3511. Bhâg. P. 9, 19, 14.
1383. Vgl. Spruch 3047.
1386. = III, 45 JOHNS. S. 301 ed. RODR. a. b. ग्रात्रा (sic) प्राणिभिर्दा^० RODR., ग्रावा प्राणिना JOHNS. c. अत्पोपायो JOHNS.
1393. = II, 114 JOHNS. d. Umgestellt: विषमाः सर्वथा.
1404. = I, 16 JOHNS. b. न वापि.
1406. = 3, 26 lith. Ausg. II. a. गायना. b. सत्येतरपक्षपातिनः (die Scholien erwähnen eine Lesart: न परद्रोहनिबद्धबुद्धयः). c. नृपसन्ननि नाम के. d. भरोन्नमिता.
1407. = III, 81 JOHNS. b. वित्तस्य st. द्रव्यस्य. c. चापि st. वापि.
1412. = NĪTISAṆK. 73. a. गृहमुवाद् st. भवरसे. c. समुचितं st. प्रतिदिनं.
1422. Vgl. Spruch 1923.
1424. = MBh. 12, 6487, b. 6488, a.
1431. = 2, 94 lith. Ausg. II. a. Die Scholien: कृत (st. वत) इति संशये.